ISSN:2583-8849



मोनिका गौड़
राजस्थान

मुरझाई रूह

एक मुद्दत हुई मेरी रूह ने खिलकर नहीं देखा,
बसंत आए भी तो किसके नाम का टीका।
फूलों ने भी पूछना छोड़ दिया,
कि खुशबू क्यों नहीं देती अब ज़ख्मों की लकीरें।

हँसती तो हूँ दुनिया के लिए,
पर आईने से नज़रें चुराती हूँ।
वो लड़की जो आँखों में चमक रखती थी,
अब साये में खुद को छुपाती हूँ।

हर सुबह एक सज़ा सी लगती है,
हर रात एक बोझ उठाती हूँ।
ज़िंदा हूँ पर जीती नहीं,
बस साँसों को ढोती जाती हूँ।

काश कोई आकर कह दे,
कि मुरझाना तेरा मुकद्दर नहीं।
काश कोई छू ले इन पत्तों को,
और कह दे कि पतझड़ आख़िरी नहीं।

मुद्दतों से प्यासी रूह को,
एक बूँद मोहब्बत की चाहिए।
खिलने के लिए फूल को,
बस एक नज़र इनायत की चाहिए।

वफ़ा की तर्बियत से लबरेज़ हूँ मैं

वफ़ा की तर्बियत से लबरेज़ हूँ मैं,
तेरे सिवा किसी का ख़याल करूँ भी क्यों।

दिल ने तुझे ही अपना ख़ुदा मान लिया है,
अब और किसी से इश्क़ का सवाल करूँ भी क्यों।

तेरी ही आहटों से महकती हैं धड़कनें,
तेरे सिवा किसी को अपना मलाल करूँ भी क्यों।

तू मेरी रूह में इस तरह उतर चुका है,
अब ख़ुद से भी तेरा कोई सवाल करूँ भी क्यों।

तेरे नाम से ही रौशन है मेरी हर शब,
फिर चाँद किसी और के हवाले करूँ भी क्यों।

जब इश्क़ तुझसे है तो उम्र भर तेरा ही रहूँ,
इस दिल को किसी और के हवाले करूँ भी क्यों।